

पीगू के कल्याणवादी अर्थशास्त्र की दशाओं की आलोचनात्मक व्याख्या

प्रतिष्ठित सम्प्रदाय के पीगू ऐसे सर्वप्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने 'कल्याण' (Welfare) शब्द की वैज्ञानिक विवेचना करके इस विचार को लोकप्रिय बनाया। पीगू का

अर्थशास्त्र मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण (Utility Analysis) पर आधारित है। आधुनिक अर्थशास्त्री पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र को प्राचीन कल्याणवादी (Old Welfare Economics) के नाम से जानते हैं। प्रो. पीगू को यह श्रेय जाता है कि उन्होंने कल्याणवादी अर्थशास्त्र की रचना में एक वैज्ञानिक आधार (Scientific Basic) को अपनाया है। पीगू के अनुसार कल्याण शब्द व्यक्ति की मानसिक स्थिति को दिखलाता है जो उसे कुछ वस्तुओं अथवा सेवाओं के उपभोग से प्राप्त होती है। व्यक्ति के कल्याण का आधार, इस प्रकार मनुष्य की आवश्यकताओं की संतुष्टि होता है। अतः समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों की संतुष्टियों के योग को सामाजिक कल्याण (Social Welfare) कहा जाता है। यह शब्द अपने आप में काफी व्यापक और विस्तृत है, अतः इसको एक निश्चित अर्थ देने के लिए प्रो. पीगू ने इसको 'आर्थिक कल्याण' (Economic Welfare) के अध्ययन तक सीमित किया है। पीगू के अनुसार, आर्थिक कल्याण कुल सामाजिक कल्याण का एक अंग है। पीगू के अनुसार, "आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है, जिसे मुद्रा के मापदण्ड से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से संबंधित किया जा सकता है।" उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि पीगू के अनुसार केवल ऐसी वस्तुएँ और सेवाएँ आर्थिक कल्याण में शामिल की जानी चाहिए जिनका मुद्रा के माध्यम से विनिमय किया जा सके। दूसरे शब्दों में, ऐसी सभी वस्तुएँ और सेवाएँ, जो मुद्रा में मापी नहीं जा सकती हैं, सामाजिक कल्याण अथवा गैर-आर्थिक कल्याण में शामिल की जाती हैं।

पीगू के कल्याणकारी अर्थशास्त्र की मान्यताएँ (Assumptions of Pigourian Welfare Economics)

पीगू के कल्याणवादी अर्थशास्त्र में निम्नलिखित मान्यताएँ निहित हैं

- (i) उपभोक्ता का व्यवहार विवेकशील (Rational) पाया जाता है तथा प्रत्येक उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं पर किए गए व्यय से अधिकतम संतोष प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।
- (ii) व्यक्ति अपने संतोष की दूसरों से तथा अपने द्वारा उपभोग की गयी वस्तुओं की विभिन्न मात्राओं से प्राप्त संतुष्टि की आपस में तुलना कर सकता है।
- (iii) एक ही समुदाय अथवा देश में विभिन्न व्यक्ति एक समान परिस्थितियों में एक समान वास्तविक आय से समान संतुष्टि प्राप्त करते हैं। अन्य शब्दों में, निर्धन तथा धनी व्यक्तियों की एक दी हुई आय से संतुष्टि प्राप्त करने की क्षमता समान होती है। (iv) उपभोक्ता की आय पर भी सीमान्त उपयोगिता हास नियम लागू होता है।

सामाजिक कल्याण के अधिकतमीकरण की दशाएँ (Optimisation conditions of Social Welfare)

प्रो. पीगू ने अपनी मान्यताओं के आधार पर सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने की दो दशाओं (Two conditions) अथवा दोहरी कसौटियों का उल्लेख किया है प्रथम, अन्य बातें समान रहने पर (विशेषकर उपभोक्ताओं की आय तथा रुचियों में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो) राष्ट्रीय आय की वृद्धि के फलस्वरूप आर्थिक कल्याण में वृद्धि होगी। अन्य शब्दों में दी गई दशाओं के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक कल्याण में सीधा संबंध पाया जाता है।

द्वितीय, यदि राष्ट्रीय आय के आकार में कोई परिवर्तन नहीं होता है तब समाज के धनी व्यक्तियों से गरीब व्यक्तियों की ओर होने वाला आय का हस्तान्तरण वर्गों की आय में होने वाला कोई भी हस्तान्तरण आर्थिक कल्याण में वृद्धि करता है। उपरोक्त दोनों मानदण्डों की पीगू ने विस्तृत व्याख्या इस प्रकार की है किसी एक वस्तु की मात्रा में वृद्धि करके अथवा उत्पत्ति के साधनों को अपेक्षाकृत सामाजिक महत्व की अधिक उत्पादक शाखाओं में लगाया जाता है तो निःसन्देह राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होगी। तथा परिणामस्वरूप आर्थिक कल्याण की मात्रा

में भी वृद्धि होगी, लेकिन इसकी मौलिक शर्त यह है कि ऐसा करने से किसी दूसरी वस्तु की मात्रा में कमी नहीं होनी चाहिए तथा समाज के निर्धन वर्गों की आय के अंश में गिरावट नहीं आनी चाहिए। इस व्याख्या का दूसरा महत्वपूर्ण रूप यह है कि अर्थव्यवस्था को ऐसे ढंग से पुनर्गठित किया जाए कि उसके फलस्वरूप निर्धन वर्गों की आय को कम किए बिना, राष्ट्रीय आय में सुधार होता हो तो आर्थिक कल्याण में भी वृद्धि होगी। अधिकतम सामाजिक कल्याण (Maximum Social Welfare) उस समय प्राप्त होता है जब राष्ट्रीय आय अधिकतम रहती है। यही राष्ट्रीय आय आदर्श उत्पादन (ideal output) है। इस उत्पादन की माप पीगू द्वारा सामाजिक मूल्य पर की गई है, निजी मूल्य पर नहीं। यह उत्पत्ति उस समय प्राप्त होती है जब उत्पादन के साधनों की सीमान्त सामाजिक उत्पत्ति सभी उद्योगों में समान रहती है।

आलोचना (Criticism)-

पीगू द्वारा दी गयी विस्तृत व्याख्या के बावजूद, उसके विरुद्ध आलोचनाएँ की गयी हैं जो निम्न हैं

(i) अधिकांश अर्थशास्त्री पीगू के इस मत से सहमत नहीं हैं कि उपयोगिता की गणनावाचक माप सम्भव है और न वे पीगू की इस मान्यता से सहमत हैं कि वस्तुओं में निहित उपयोगिताओं की अन्तरवैयक्तिक तुलना की जा सकती है। आलोचकों की राय में पीगू की यह मान्यता अव्यावहारिक है।

(ii) मूल्यगत निर्णय (Value Judgements) कल्याणवादी अर्थशास्त्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पीगू ने इन निर्णयों की कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं की है।

(iii) यह भी आलोचना की जाती है कि पीगू द्वारा स्वीकार की गयी यह मान्यता कि समान परिस्थितियों में स्थित विभिन्न व्यक्ति समान वास्तविक आय से समान संतुष्टि प्राप्त करते हैं, किसी वैज्ञानिक आधार को नहीं अपनाए हुए है, बल्कि इसका आधार केवल नैतिक है।

(iv) राष्ट्रीय आय के द्वारा आर्थिक कल्याण की माप सही ढंग से नहीं हो सकती है। इसका कारण यह है कि मूल्य परिवर्तनों के द्वारा राष्ट्रीय आय में तो परिवर्तन हो जाता है, लेकिन वास्तविक वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा नहीं बदलती है। स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आय का परिवर्तन, आर्थिक कल्याण में परिवर्तन नहीं उत्पन्न करता है। इसी प्रकार यदि अतिरिक्त राष्ट्रीय आय की माप करनी हो वह भी व्यावहारिक स्तर पर संभव नहीं है।

(v) डॉ. ग्राफ के अनुसार मुद्रा कभी भी आर्थिक कल्याण को सही ढंग से नहीं मापती हैं बल्कि मुद्रा के मापदण्ड द्वारा बहुत बार भ्रम तथा विरोधाभास उत्पन्न हो जाते हैं। कि आधुनिक अर्थशास्त्री कल्याणवादी अर्थशास्त्र के अध्ययन में उपयोगिता के क्रमवाचक विश्लेषण (Ordinal Analysis of Utility) को श्रेष्ठ मानते हैं।